शोध मंथन Vol. XIII No.IV Oct.-Dec. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

भारत और चीन सम्बन्ध

प्राप्तिः 22.12.2022
स्वीकृतः 28.12.2022

डॉ० शिवानी
राजनीतिशास्त्र विभाग
डी०ए०वी० सैन्टनरी कॉलिज, फरीदाबाद
ईमेलः *shivanitanwar1973@gmail.com*

108

सारांश

राष्ट्रों के बीच रिश्ते न केवल दो देशों के बीच संबंध के निहितार्थ को बतलाते हैं, बल्कि पूरे क्षेत्र व दुनिया पर भीशण प्रभाव को भी दिखाते हैं। इसलिए, अन्तर्राष्ट्रीय रिश्ते हर मायने में बहुत जरूरी हैं। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि अन्तर्राष्ट्रीय संबन्ध सभी पहलुओं से महत्त्वपूर्ण है और यह पहलू, तब और महत्त्वपूर्ण हो जाता है जब यह मामला दो पड़ोसी राष्ट्रों से जुड़ा होता है। दो देशों के बीच रिश्ता हमेशा महत्त्वपूर्ण होता है, न केवल क्षेत्रीय राजनीति के हिसाब से बल्कि, वैश्विक राजनीति के हिसाब से भी इसका महत्व होता है। अगर दोनों देशों के बीच मित्रतापूर्ण संबंध बने रहते हैं, तो इस क्षेत्र का माहौल अच्छी आक्सीजन युक्त होता है, अर्थात् शान्ति, समृद्धि, उन्नति और विकास की ओर समाज अग्रसर होता है, किन्तु वहीं इसका उल्टा हो तो वातावरण धुएँ एवं जहर से भर जाता है, जो हमेशा संदेह, प्रतिद्वन्द्विता और शत्रुता आदि से युक्त होता है, जिसमे विकास के स्थान पर प्रतिद्वन्द्विता के कारण आर्थिक प्रगति नहीं हो पाती है। जिसके परिणामस्वरूप, प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। इसलिए राष्ट्रों को अन्य राष्ट्रों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध को बढ़ावा देना चाहिए तथा पड़ोसी राष्ट्रों के साथ इस प्रकार की विदेश नीति से उस क्षेत्र विशेष के साथ वैश्विक शान्ति समृद्धि और स्थायित्व का वातावरण उत्पन्न होगा।

मुख्य बिन्दु

वैश्विक राजनीति, प्रतिद्वन्द्विता, राजनय आदि।

प्रस्तावना

चीन और भारत एशिया के दो बड़े राष्ट्र है, जो विश्व में अपनी जनसंख्या के हिसाब से क्रमशः प्रथम एवं दूसरे स्थान है और क्षेत्रफल के हिसाब से क्रमशः तीसरे एवं सातवें स्थान पर है। दोनों एशियाई देश पड़ोसी होने के नाते इनकी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा काफी बड़ी है, जो लगभग 3488 कि0मी0 लम्बी है। यह सीमा बहुत हद तक दोनों देशों के मध्य संबंधों को अधिक प्रभावित करती है। सबसे पुरानी सभ्यता होने के चलते भारत और चीन के संबंध प्राचीन काल से विद्यमान रहे हैं। यहाँ तक कि, किसी प्रकार के राजनीतिक रिश्ते के स्थापित होने के पहले दोनों देशों के बीच व्यापक स्तर पर आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंध (रिश्ते) थे। चीन और भारत के बीच एक व्यापार का रिश्ता सिल्क रोड के जरिये फल–फूल रहा था, जो दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान का बेहतर सम्पर्क साबित हुआ।

राजनय

राजनय शब्द, अंग्रेजी भाषा के Diplomacy डिप्लोमेसी का हिन्दी रूपांतरण है, जिसकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा के Diploun शब्द से हुयी है। इस शब्द का अर्थ 'मोड़ना या दोहरा करना' होता है। राजनय या कूटनीति शब्द का प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के परिप्रेक्ष्य में किया जाता है, जिसका तात्पर्य है कि दो या दो से अधिक राष्ट्रों, संस्थाओं या प्रतिनिधियों के बीच सन्तोषप्रद वातावरण के निर्माण के लिए की जाने वाली कलात्मक प्रक्रिया से है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में, राजनय के बारे में व्यापक वर्णन किया गया है, जिस कारण कौटिल्य और राजनय को पर्यायवाची माना जा सकता है। राजा के समस्त कार्यों का वर्णन करते हुए, उन्होंने दूसरे देशों के साथ संबंधों को बनाये रखने के लिए मण्डल सिद्धान्त (जिसमें 12 राज्यों) दिया है। भारतीय राजनय के इतिहास में यह यथार्थवाद का द्योतक है, जिसमें उन्होंने बताया है कि सीमा से लगा हुआ पड़ोसी देश स्वभावतः शत्रु होता है, (यहाँ चीन के संन्दर्भ में यह बात सिद्ध होती है।) उनके प्रति अपनायी जानेवाली शाड्गुण्य नीति सन्धि, विग्रह, यान, आसन द्वैधीभाव एवं संश्रय का विस्तार से उल्लेख किया है। साथ ही, वैदेशिक नीति के सफल संचालन के लिए कौटिल्य ने साम, दाम, दण्ड और भेद की नीति का भी प्रावधान किया है।

सामान्य परिचय

भौगोलिक विस्तार– भारत, उत्तरी गोलार्ध में स्थित एशिया महाद्वीप के भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे बड़ा देश है, जो विश्व में क्षेत्रफल के हिसाब से सातवाँ सबसे बड़ा देश है। इसका विस्तार उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में हिन्द महासागर तक है और पश्चिम में अरब सागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी से घिरा है। भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश एवं म्यांमार हैं। साथ ही, भारतीय दक्षिणी सीमा से अलग पाक जलडमरूमध्य एवं मन्नार की खाड़ी से अलग हिन्द महासागर में स्थित श्रीलंका देश है। इन सभी पड़ोसी देशों की सीमाएं भारतीय सीमा, पाकिस्तान से 3323 कि०मी०, चीन से 3488 कि०मी०, बांग्लादेश से 4096.7 किमी0, नेपाल से 1751 किमी0, भूटान से 699 किमी0 और म्यामांर के साथ 1643 किमी0 जुड़ती है।

भारत, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी स्थिति को दिन–प्रतिदिन मजबूत कर रहा है। रक्षा, अन्तरिक्ष, औद्योगिक एवं संचार क्षेत्र में देश में बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से 1962 में, भारतीय राष्ट्रीय अन्तरिक्ष अनुसंधान समिति (INCOSPA) की स्थापना के साथ अपने अन्तरिक्ष अनुसंधान की शुरूआत की। 1969 में, इसरो की स्थापना से लेकर 1972 में अन्तरिक्ष आयोग का गठन किया गया, जो देश की सामाजिक आर्थिक लाभ हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास एवं अनुप्रयोग को बढ़ावा देता है।

भारत, अपनी स्थलाकृति और भौगोलिक विविधता के कारण अपनी लगभग 15200 किमी0 लम्बी सीमा अपने सात प्रमुख पड़ोसी देशों के साथ साझा करता है, इसलिए भारतीय रक्षा बलों के लिए यह एक बड़ी चुनौती है। इस चुनौती से निपटने के लिए, भारत अपनी तीनों सेनाओं वायुसेना, जल सेना एवं थल सेना को मजबूत कर रहा है और अच्छी ट्रेनिंग प्रदान कर रहा है और आधुनिक हथियारों से सुसज्जित कर रहा है। इसके अलावा, भारत अनेक प्रकार की मिसाइलों का परीक्षण कर चुका है। सतह से सतह पर मार करने वाली, सतह से हवा में, हवा से सतह पर मार करने वाली और हवा से हवा में

मार करने वाली अत्याधिक मिसाइलों का परीक्षण कर चुका है। इसके अलावा, भारतीय सेना पृथ्वी श्रेणी, अग्नि श्रेणी, सूर्या, पनडुब्बी द्वारा ज्ञ–15 सागरिका, सामरिक मिसाइल, शौर्य, प्रहार, क्रूज मिसाइल, ब्रह्मोस, टैंक भेदी नाग, इत्यादि प्रकार की मिसाइलों से सुसज्जित है। इसके साथ ही, भारतीय सेना का परमाणु हथियारों से सम्पन्न होना भी भारत को एक मजबूत देश की श्रेणी में लाता है।

चीन विश्व के नक्शे में 53° उत्तर में 18° अक्षांश तथा 134° पूर्व से 70° पूर्व देशान्तर तक फैला हुआ है। भौगोलिक दृष्टिकोण से चीन को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है– उत्तर में, हवांग्हों (पीली) नदी का मैदानी भाग, दक्षिण में यांग्त्सी नदी एवं सुदूर दक्षिण में सिकियांग नदी। इन्हीं नदियों के मैदान प्रबल उर्वरा शक्ति से परिपूर्ण होने के कारण चीन के निवासियों के जीवन में अपना विशिष्ट योगदान करती है।

शोध प्रविधि

भारत और चीन के राजनयिक संबंधों में अध्ययन की ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया है तथा इसके साथ–साथ विश्लेषणात्मक और विवरणात्मक पद्धति का प्रयोग कर अध्ययन को पूरा किया गया gS bl ds fy, Hkkjr phu nksuksa ns"kksa }kjk ,d nwljs dh ljdkj ds fy[ks x;s i=] White paper, भाषण, जर्नल्स, न्यूजपेपर आर्टिकल्स आदि जैसी चीजों का प्रयोग किया गया है और द्वितीयक स्रोत के रूप में पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाओं का लेख मूल लेख निबन्ध क्रिटिसिज्म और कमेन्ट्रीज आदि का प्रयोग किया गया है। साथ ही, अनेक प्रकार के शोध–पत्र का सहारा लिया गया है।

साहित्य समीक्षा

होल्सलैग. जोनाथन, "चाइना एण्ड इण्डियाः प्रास्पेक्ट्स फार पीस '' कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस – 2013, इस पुस्तक में लेखक ने यह बताया है कि भारत और चीन के बढते व्यापारिक क्षेत्र के कारण आर्थिक शक्ति के रूप में उदय ने दोनों देशों के समक्ष साझा चुनौतियों को उत्पन्न किया है साथ ही, दोनों देशों के मध्य आर्थिक सहयोग भविष्य में अन्य क्षेत्रों में सहयोग के बजाय, निरन्तर संघर्ष की स्थिति को बढ़ावा देगा। अतः इस प्रकार के आर्थिक सहयोग के लिए दोनों देशों को नयी प्रकार की रणनीतियों को अपनाने पर जोर देना चाहिए।

7वीं इफ्रैन्ट्री ब्रिगेड कमाण्डर के रूप में डाल्वी ने 1962 का चीन भारत युद्ध लड़ा और चीन द्वारा उन्हें बन्दी बनाये गये 7 महीने के दौरान, डाल्वी के चिन्तन और अनुभवों का सामावेश है। इस पुस्तक में डाल्वी ने भारतीय सैनिकों की हार एवं नरसंहार के बारे में विस्तृत वर्णन किया है। युद्ध का लेखा जोखा ग्राफिक और भारत की हार का वर्णन है। भारत की हार के लिए तीन लोगों को जिम्मेदार माना, जिसमें पण्डित जवाहार लाल नेहरू, कृष्ण मेनन और जनरल वृजमोहन कौल हैं। इस संवेदनशील विषय के कारण एवं कठोर नकारात्मक रोशनी में भारतीय नेताओं के चित्रण के कारण इस पुस्तक को भारत सरकार द्वारा जारी करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था, किन्तु 2010 में विशेष संस्करण का पुनर्मुद्रण है।

भारत और चीन का संबंध उतार–चढ़ाव पूर्ण रहा है। हिन्दी चीनी भाई–भाई का नारा लगाते हुए भी चीन ने 1962 में भारत पर आक्रमण कर दिया। इसके पश्चात्, चीन लगातार भारत के अन्य क्षेत्रों में अतिक्रमण करता रहा है। इस अतिक्रमण के लिए न केवल सरकारी नीतिया जिम्मेदार है, बल्कि अन्य कारक भी हैं। इस पुस्तक में केवल पण्डित नेहरू के लेखों एवं भाषणों ने आधार पर उनकी चीन

संबंधी नीति का वर्णन किया गया है। साथ ही, चीन द्वारा हमें सिखाए गये सबक, जो हमने सीखने का प्रयास नही किया, उसका वर्णन किया गया है और उन्हें उद्घाटित कर अर्न्तमंथन एवं पुनर्विचार करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

इस पुस्तक में तिब्बत के सन्दर्भ में विभिन्न विचारकों एवं राजनेताओं के लेखों का वर्णन एवं तिब्बत की समस्या का विस्तृत अध्ययन किया गया है, जिससे भारत के लोगो में तिब्बत के बारे में व्यापक समझ बन सके। इस पुस्तक को तिब्बत की त्रासदी एवं तिब्बत का भारतीय एवं विश्व के लिए महत्त्व का वर्णन है।

भारत और चीन दोनों सुपर पावर बनने की ओर अग्रसर हैं। भारत के विकास की गति धीमी, किन्तु निरन्तर गतिमान है। वहीं चीन की विकास दर में वृद्धि देखी जा सकती है। भारत और चीन ने विकास एवं उन्नति के शिखर छुए हैं, हालांकि कुछ विदेशी स्वरों ने कहा कि भारत विकास के मामले में चीन को पीछे छोड़ देगा। यह प्रश्न है कि सुपर पावर की दौड़ में कौन विजयी होगा, भारतीय कछुआ या चीनी खरगोश? इस पुस्तक में दोनों देशों के इतिहास, राजनीति, अर्थव्यवस्था व संस्कृतियों का विश्लेषण एवं विवरण है। भू–राजनीति के उभरते दौर में, भारत और चीन की भूमिका का अनूठा एवं आकर्षक विवरण है।

21वीं सदी में, चीन और भारत विकास की ओर अग्रसर हैं। दोनों देश अपने विकास को निरन्तर जारी रखे हुए हैं। विश्व अर्थव्यवस्था में अपनी भू–राजनीतिक शक्ति सन्तुलन को बनाये रखना अहम है। भारत विश्व में बढ़ती जनसंख्या का स्वामी है क्या अपनी स्थिति को विश्व में उपस्थित करा पायेगा? क्या चीन अपनी स्थिति को मजबूत बना पायेगा? क्या चीन महाशक्ति बन पायेगा? हम सबके अध्ययन के लिए, लेखक द्वारा पूर्वी देशों का विश्लेषण करके, विश्व के शक्ति के केन्द्र को वाशिंगटन, बीजिंग एवं दिल्ली के मध्य स्थित बताया गया।

भारत में बढ़ती जनसंख्या और गरीबी, भारत द्वारा गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम को सफल होने नहीं दे रहा है। चीन द्वारा जारी गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम की तुलना में भारतीय गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम बहुत कम सफल रहा है। साथ ही, चीन द्वारा भारत के पड़ोसी राज्यों में अनेक योजनाओं को क्रियान्वित किया जा रहा है। चीन, सड़क और समुद्री रास्ते से उन देशों तक अपनी पहुँच बना रहा है, इससे भारत को घेरने की कोशिश कर रहा है। भारत को इन चीजो से उलझाये रखना चाहता है और अपना विकास करना चाहता है। इस पुस्तक में इन सब बातों का बहुत ही अच्छा वर्णन किया गया है।

अध्ययन उद्देश्य (Objective of Study)

- भारत और चीन के संबंध 2005 के पहले तक संबंधों का परीक्षण करने का प्रयास करना।
- भारत और चीन के राजनीतिक संबंधों को कमजोर करने वाले कारकों का परीक्षण करना।

दोनों देशों के बीच लगभग 14 वर्षों के बाद राजदूत स्तर के संबंध को स्थापित करने पर जोर दिया गया एवं चीन के द्वारा यह आग्रह किया गया कि दोनों देशों में राजदूतावास स्थापित किये जायें, जिसे 1962 के बाद, भारत ने वापस बुला लिया था। 1976 में, के0आर0 नारायणन को (1992 में उपराष्ट्रपति एंव 1997 में राष्ट्रपति) को चीन में अपना राजदूत नियुक्त किया और दूसरी तरफ चीन ने भारत में अपना राजदूत

जुलाई 1976 में चेन – चुन – युन (Chain Chan yuan) को नियुक्त किया। इस तरह से एक बार फिर से दोनों में संबंधों को गहरा और मधुर बनाने एवं संबंधों की पुनर्स्थापना पर जोर दिया गया।

जनवरी 1978 में, वांग–पिंग – नान के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय चीनी प्रतिनिधिमण्डल भारत आया। इसके बाद व्यापार, वाणिज्य प्रतिनिधि मण्डल का भी दौरा हुआ। इससे दोनों देशों के बीच 1979 में 1 करोड़ 20 लाख का व्यापार होना तय हुआ। उसके बाद, चीन के कृषि वैज्ञानिक ने भारत का दौरा किया। कुछ दिनों बाद, चीन के विदेश मंत्री से न्यूयार्क में भारतीय विदेशमंत्री अटल बिहारी की मुलाकात हुयी। अक्टूबर 1978 में, चीन जब अपनी स्थापना के रूप में 29वीं वर्षगाठ मना रहा था, तब भारतीय उपराष्ट्रपति वी०डी० जत्ती वहाँ पर मौजूद थे। मृणालिनी साराभाई के नेतृत्व में एक नृत्य मण्डल चीन गया, जहाँ पर उनका भव्य स्वागत किया गया। इस तरह से दोनों देशों में नजदीकी बढ़ाने के लिए दोनों देशों द्वारा अनेक प्रकार के प्रयास किये गये।

1979 में, अफगानिस्तान में, सोवियत संघ के हस्तक्षेप करने से एक नये शीत युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गयी तथा एशिया में एक जंग सी छिड़ गयी। सोवियत संघ युद्ध से भारतीय नेताओं में थोड़ी निराशा हुयी। इस सबको ध्यान में रखते हुए, चीन ने पाकिस्तान को सैनिक उपकरणों की आपूर्ति भी की। चीन भारत के साथ वार्ता स्थापित करने का प्रयास करता रहा है और यह चाहता है कि चीन एशिया में रूस की बढ़ती हुई शक्ति एवं प्रभाव के सन्दर्भ में आगाह करेगा।

1980 में, इंदिरा गांधी ने पुनः भारत के प्रधानमंत्री के रूप में कार्यभार संभाला और जनता सरकार में संबंधों में सामान्यीकरण की, जो प्रक्रिया शुरू हुई थी उसे आगे बढ़ाने के लिए प्रयास किया। मई 1980 में, यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्सल टीटो के अन्तिम संस्कार में बेलग्रेड में उनकी चीनी प्रधानमंत्री से मुलाकात हुयी। यह मुलाकात 1960 के नेहरू एवं चाऊ – एन–लाई की मुलाकात के बाद पहली प्रधानमंत्री स्तर की मुलाकात थी। इस मुलाकात के दौरान, दोनों नेताओं ने संबंधों को सुधारने पर चर्चा की और आगे कदम बढ़ाने पर सहमत हुए, किन्तु चीन का कहना था कि वह बिना सीमा विवाद को सुलझाये अन्य क्षेत्रों में सुधार चाहता है, किन्तु भारत के लिए सीमा विवाद सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा था।

जून 1981 में, चीनी विदेशमंत्री हुआन – हुवा भारत आये और सीमा विवाद को सुलझाने के लिए अपने रचनात्मक सहयोग पर जोर दिया और कहा कि अन्य क्षेत्रों में भी सहयोग बनाना होगा। जैसे– चीन ने भारतीयों को मान सरोवर जाने के लिए सुविधा प्रदान करना। इसके बाद 1981 में, मैक्सिको में चीन के प्रधानमंत्री चाऊ – चियांग एवं भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की मुलाकात हुयी।''

1981 में, चीन के प्रधानमंत्री ने चाओ – चिआंग भारत की यात्रा पर आये और उनका बड़ी गर्म जोशी से स्वागत हुआ। पिछले 21 वर्षों के बाद, किसी चीनी प्रधानमंत्री का दौरा हुआ। अब चीन को दिल्ली की आवश्यकता महसूस हो रही थी, क्योंकि शीत युद्ध अपने चरम पर पहुँच गया था। भारतीय विदेश मंत्री नरसिम्हा राव ने कहा कि बातचीत नये शिरे से शुरू किया जा सकता है। दोनों को यह बात पता थी कि अक्साई चिन क्षेत्र पर चीनी कब्जों के एवज् में चीन द्वारा मैकमाहोन रेखा को भारत या चीन की सीमा मंजूर कर लेना सौदा नहीं है।

मई 1982 में, दोनों नेताओं में पहले सीमा विवाद को सुलझाने की अहम पहल रही है और वार्ता को आगे बढ़ाने पर जोर दिया जाता रहा। चीनी प्रतिनिधिमण्डल ने कहा कि इस वार्ता के माध्यम से दोनों के संबंधों को सामान्य करने की प्रेरणा एवं भविष्य के लिए आधार बन सकता है।

इस तरह से देखते हैं कि विवादों के समाधान के लिए भारत एवं चीन द्वारा 1982–1987 के मध्य वार्ताओं का लगभग आठ दौर हुआ। इस तरह से संबंधों को सुधारने के लिए प्रयत्न जारी रहे। अगस्त 1984 में, एक व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। इस समझौते द्वारा एक दूसरे को सर्वाधिक प्रियराष्ट्र (Most Favoured Nation) की श्रेणी देने का वचन दिया।

1985 में, छठें दौर की वार्ता भारत चीन के बीच नई दिल्ली में हुयी। इसमें सीमा संबंधी प्रश्नों पर कुछ प्रगति हुयी, परन्तु पश्चिमी क्षेत्र के सम्बन्ध में ऐसा नहीं हुआ। 1986 में, सातवें दौर की वार्ता बीजिंग में सम्पन्न हुयी। अगस्त 1986 में, विदेश राज्यमंत्री के०आर० नारायण ने राज्य सभा को बतलाया की चीन ने भारतीय क्षेत्र सुमदुरोंग – चु घाटी में एक हेलीपैड का निर्माण किया है।चीन ने स्वीकार किया कि मैकमहॉन रेखा वास्तविक नियंत्रण रेखा है, किन्तु भारत का मानना है कि यह रेखा दोनों देश की विभाजक रेखा है।

20 फरवरी 1987 को, अरुणाचल प्रदेश को भारतीय संघ का 24वां राज्य घोषित किया गया, तो 21 फरवरी 1987 को चीनी विदेश मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने कहा कि भारत ने इस कार्यवाही से चीन की प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता का उल्लघंन किया है। वहीं दूसरी तरफ भारत का मानना है कि यह उसका आन्तरिक मामला है। इस विरोध को घरेलू मामले में हस्तक्षेप की संज्ञा दी।

18 दिसम्बर 1988 की राजीव गांधी की यात्रा, पंडित नेहरू के 1959 के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री का पहला दौरा था। इस यात्रा में प्रधानमंत्री राजीव गांधी के अलावा विदेश मंत्री नटवर सिंह, वाणिज्य मंत्री दिनेश सिंह, विदेशमंत्री पी० वी० नरसिम्हा राव सूचना प्रसारण मंत्री गोपी अरोड़ा भी साथ गये। इस दौरे को बहुत बडी उपलब्धि के तौर पर देखा गया। राजीव गांधी द्वारा इस यात्रा के सम्बन्ध में यह कहा गया कि "इस यात्रा से एशियाई शक्ति की राजनीति में नये युग की शुरूआत होगी, जिससे ऐतिहासिक कारणों से संदेहों एवं शत्रुता की भावना से ग्रस्त दो पड़ोसी राष्ट्रों में बेहतर संबन्धों का रास्ता खुल जायेगा।

1990 में, प्रधानमंत्री बी0पी0 सिंह ने भी पूर्ववत् सरकारों की भांति चीन के साथ संबंधों को सुधारने का प्रयास निरन्तर जारी रखा। तात्कालीन विदेशमंत्री इन्द्र कुमार गुजराल ने संसद में यह जानकारी दी कि दोनों देशों के सीमा विवाद के प्रश्न पर, भारत–चीन संयुक्त कार्यकारी दल का गठन किया गया है। नयी सरकार बनने के बाद, चीन द्वारा स्वयं पहल करते हुए चीनी विदेश मंत्री भारत की यात्रा पर आये। विदेश मंत्री ने वार्ता के दौरान इच्छा प्रकट की कि दोनों राष्ट्रों के बीच वाणिज्यिक एवं आर्थिक संबंधों को बढ़ाया जाये तथा संयुक्त उद्योगों की स्थापना की जाये। इसका अभिप्राय यह हो सकता है कि चीन यह नहीं चाहता कि सीमा विवाद हल करने के बाद ही व्यापारिक संबंध को स्थापित किया जाय। भारत और चीन के बीच संबंधों को, चीनी विदेशमंत्री ने माना कि विवादों को निपटाने के लिए आपसी बातचीत जरूरी है।

जून 1991 में, नरसिंहराव भारत के प्रधानमंत्री बनें। उन्होंने भी आपसी संबंधों को सामान्य बनाये रखने पर जोर दिया और प्रयत्न जारी रखा। जिस कारण सीमा विवाद के बावजूद सद्भावनापूर्ण वातावरण का निर्माण हुआ।

21 फरवरी 1992 में, भारत चीन संयुक्त कार्यदल की बैठक के बाद एक संयुक्त विज्ञप्ति जारी की गयी, जिसमें इस पर सहमति हुयी कि दोनों ही राष्ट्र वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शान्ति और संतुलन कायम रखने के लिए सैनिक अधिकारियों में घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

मई 1992 को, भारतीय राष्ट्रपति वेंकट रमन ने चीन की यात्रा की, जिसका उद्देश्य शान्ति, सद्भावना, मित्रता और पारस्परिक विश्वास को बढ़ाना था। यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि चीनी राष्ट्रपति श्री यांग ने वेंकट रमन से बातचीत के दौरान 'हिन्दी चीनी भाई–भाई युग की याद दिलाई और आश्वासन दिया कि चीन गहरी और अटूट मित्रता निभायेगा'। चीनी राष्ट्रपति यांग ने राष्ट्रपति वेंकट रमन की यात्रा को बड़ी उपलब्धि बताया। 30 वर्षों के बाद, जुलाई 1992 में, दोनों देशों व्यापार की शुरूआत हुयी तथा दिसम्बर 1992 में, बाम्बे एवं शंघाई में दूतावास खोले गयें, फिर 1993 में, दोनों पक्षों के बीच एक सीमा समझौता, व्यापार और पोस्ट खोलने पर सहमति बनी। जुलाई 1992 में, शरद पवार बीजिंग के दौरे पर जाने वाले प्रथम रक्षामंत्री थे। इस दौरान दोनों देशों में रक्षा प्रतिश्ठान, अकादमिक, सैन्य, वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेन देन–देन को विकसित करने पर सहमति बनी।

भारत और चीन के मध्य जनवरी 1993 में, पेकिंग में एक व्यापारिक समझौता हुआ। इसके तहत भारत द्वारा चालू वर्ष में चीन को 13 – 18 लाख टन लोहे का निर्यात किया जायेगा। 1991–92 में, 11 करोड़, 12 लाख की वस्तुओं का निर्यात चीन को किया गया। इससे पूर्व निर्यात की राशि 3 करोड़ 40 लाख रुपए थी। 1978 के बाद से दोनों देशों में व्यापार संतुलन चीन के पक्ष में रहा, किन्तु 1992 में व्यापार सन्तुलन भारत के पक्ष में आ गया।

जून 1993 में, भारत के विदेश सचिव जे०एन० दीक्षित और चीन उप विदेशमंत्री जियान – चू के बीच बैठक आयोजित हुयी। इस बैठक में दोनों के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा पर हो रही, अपनी–अपनी सैनिक गतिविधियों का एक दूसरे को साझा करना और सीमा पार गमन केन्द्र खोले जाने पर सहमति हुयी। ऐसा पारगमन केन्द्र हिमाचल प्रदेश में शिपकीला दर्रे के नजदीक खोला गया। इससे पूर्व, दोनों देशों के द्वारा लिपुलेख में खोला गया था। दोनों देशों के प्रतिनिधि इस निर्णय पर पहुँचें कि सीमा संबंधी समस्याओं को चरणबद्ध तरीके से हल किया जाना चाहिए।

इस तरह से 1994 में, शिपकीला दर्रा खोल दिया गया। दोहरे कराधान से बचने के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किये। स्वास्थ्य, चिकित्सा, विज्ञान पर सहयोग के लिए एक समझौता हुआ। वीजा आवेदन करने की प्रक्रिया को सरल बनाने पर समझौता, ज्ञापन और बैकिंग सहयोग पर हस्ताक्षर किये गये। इस द्विपक्षीय वार्ता में स्थापित विश्वास निर्माण बहाली और लाईन ऑफ एक्चुअल कन्ट्रोल के स्पष्टीकरण पर विशेष चर्चा हुई। चर्चा में, लाईन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल के साथ सशस्त्र बलों की कमी और आगामी सैन्य अभ्यास की पूर्व सूचना दी जाय। 20 अगस्त 1995 को भारत–चीन के बीच दो चौकियों को हटाने की बात कही गयी थी, जो कि चू घाटी के बांडग–देग क्षेत्र से हटायी जायेगी।

28 नवम्बर 1996 में, चीनी राष्ट्रपति जियांग – जेमिन भारतीय यात्रा पर आये। इस यात्रा के दौरान, भारतीय राष्ट्रपति डॉ० शंकरदयाल शर्मा से मुलाकात की। इस मुलाकात में दोनों देशों के द्वारा

सीमा विवाद हल करने संबंधी बातों पर चर्चा हुयी। सीमा तथा नियंत्रण रेखा पर विश्वास बढ़ाने वाले उपाय करने और आक्रमण न करने व उसकी धमकी भी न देने पर सहमत हुए। इस तरह से सीमा विवाद पर ज्यादा जोर दिया और विश्वास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए वार्ताएं एवं समझौता का सहारा लिया गया, जिससे यह लगने लगा कि संबंधों में मधुरता आने लगी। चीनी राष्ट्रपति ने अन्त में यह भी कहा कि दोनों देशों के बीच मतभेद जरूर हैं, लेकिन आपस में सहयोग और साथ रहने से जो लाभ होने वाले है, वे विवाद से अधिक हैं।

मई – अप्रैल 1991 में, भारत में जब इन्द्र कुमार गुजराल प्रधानमंत्री बने, तो चीन के प्रधानमंत्री ली–पेंग ने अपना बधाई संदेश भेजा, जिसमें बेहतर संबंध की स्थापना के साथ–साथ रचनात्मक, सहयोगात्मक संबंधों को बनाये रखने की उम्मीद को भेंट की। 1988 से लेकर 1998 तक संयुक्त कार्यदल की गतिविधि धीमी रही। इन सब बातों को देखते हुए, 1998 में, चीन की सेना के जनरल फू क्वान्याऊ ने भारत की यात्रा की। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य था कि दोनों देशों के बीच विद्यमान गलतफहमी को दूर करना और संयुक्त कार्यदल की गतिविधि में तीव्रता लाना था।

मई 1997 के समझौते में, सीधी विमान सेवा प्रारम्भ करने पर जोर दिया और किसी भी तरह के विमान से सप्ताह में अधिकतम 2 उड़ानों की इजाजत होगी। मई 1998 में, भारत द्वारा परमाणु परीक्षण पर दुनिया के अनेक देशों द्वारा तीखी प्रतिक्रिया आयी। चीन ने भी भारत के इस परीक्षण की तीव्र निन्दा की, उसने संयुक्त राष्ट्र के सुरक्षा परिषद् के प्रस्ताव 1172 का पूरा समर्थन किया, जिसमें परमाणु परीक्षण की निंदा की गयी थी। भारत के रक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडिस ने चीन को भारत के लिए मुख्य खतरा बताया, जिसने एक नये विवाद को जन्म दिया। चीन ने परीक्षण को द्विपक्षीय रिश्तों को बड़ा नुकसान पहुँचाने वाली घटना के तौर पर देखा। चीन ने यह भी प्रतिरोध जाहिर किया कि जिसमें प्रधानमंत्री अटल बिहारी ने अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन को लिखे पत्र में, चीन के बड़े खतरे से निपटने के लिए परमाणु परीक्षण की जरूरत बताया। साथ ही, इसके लिए भारत से स्पष्टीकरण भी मांगा। 108 इससे भी दोनों देशों में संबंधों का जो एक काल दिखायी दे रहा था वह समाप्त होते दिखायी देने लगा था। हालांकि भारत – पाक संघर्ष (1999 कारगिल युद्ध) के समय चीन ने पाकिस्तान को समर्थन करने से इन्कार कर दिया तथा उसने पाकिस्तान से घुसपैठियों को वापस बुलाने को कहा।

जून 1999 में, भारतीय विदेशमंत्री जसवन्त सिंहा चीन की यात्रा पर गये। चीन के विदेशमंत्री जियाझुआन के साथ हुयी बातचीत में अनेक निर्णय लिये गये। इसमें दोनों देशों के मध्य सुरक्षा संवाद तंत्र प्रारम्भ करने, सीमा पर नियंत्रण की वास्तविक रेखा पर बातचीत करने के सम्बन्ध में, बातचीत प्रारम्भ करने तथा कारगिल की स्थिति पर एक दूसरे का दृष्टिकोण बताने आदि मामले शामिल थे। बीजिंग में व्याख्यान देते हुए भी जशवन्त सिंह ने कहा कि भारत चीन को अपनी सुरक्षा के लिए खतरा नहीं मानता।''

मई–जून 2000 में, भारत के राष्ट्रपति के० आर० नारायण ने चीन की यात्रा की। इस यात्रा में अनेक मुद्दों पर बात हुयी और पिछले वर्षों में परमाणु परीक्षण संबंधी मुद्दों को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। हालांकि, चीन ने इस बात को पुनः दोहराया कि करमापा के भारत में रहने से चीन विरोध गतिविधियाँ उत्पन्न हो सकती है। भारतीय राष्ट्रपति ने चीन की शंकाओं का निराकरण करते हुए यह

दोहराया कि भारत तिब्बत को चीन का स्वायत्त क्षेत्र मानते हुए, धार्मिक नेता दलाई लामा को भारत के अन्दर किसी भी राजनीतिक गतिविधि में शामिल होने की अनुमति नहीं दी जायेगी। सीमा विवाद के समाधान को, आपसी समझ, सामंजस्य और सुविधा की भावना, आधार बनाया जाना चाहिए। भारतीय नौसेना तथा चीन की नौसेना द्वारा पारस्परिक विश्वास को बढ़ाने के लिए, 15 – 18 सितम्बर 2000 में, शंघाई में, प्रथम नौसैनिक अभ्यास सम्पन्न किया गया।

जनवरी 2002 में, 140 सदस्यीय शिष्टमण्डल ने चीन के प्रधानमंत्री झू – रोंग्जी के साथ, भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान, दोनों देशों के बीच पारस्परिक सहयोग पर विशेष बल दिया गया और छः सहमति पत्रों पर हस्ताक्षर हुए, जिनमें प्रमुख रूप से विज्ञान प्रौद्योगिकी तथा बाह्य अंतरिक्ष के शान्तिपूर्ण कार्यों में उपयोग के लिए मिलजुलकर कार्य करने, पर्यटन क्षेत्रों में सहयोग तथा ब्रह्मपुत्र नदी में बाढ़ के दौरान सूचना और पर्यटन क्षेत्र में सहयोग प्रदान करना आदि था।

अप्रैल 2002 में, भारत के विदेशमंत्री जशवंत सिंह की चीन यात्रा में चीन के उप प्रधानमंत्री एवं उपविदेश मंत्री से वार्ता के बाद, दोनों देशों के नेता के बीच लाईन ऑफ कन्ट्रोल के समाधान पर चर्चा हुयी। द्विपक्षीय आर्थिक एवं व्यावसायिक सहयोग में बढोत्तरी, इस दौरे का मुख्य केन्द्र था, जिसके माध्यम से उन्होंने भारतीय व्यावसायिक समुदाय को संबोधित किया और चीन में व्यावसायिक अवसरों के लिए आमंत्रित किया। चीन ने कहा कि पाकिस्तान चीन का करीबी मित्र है, परन्तु चीन आतंकवाद के मुद्दे पर भारत का साथ देगा। इस यात्रा के दौरान सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय यह लिया गया था कि पूर्वी व पश्चिमी क्षेत्र विवादस्पद सीमाओं के नक्शे के आदान–प्रदान के लिए एक समयबद्ध कार्यक्रम निर्धारित किया जाय। इस तरह से प्रधानमंत्री अटल जी ने यात्रा के पूर्व दोनों देशों से आर्थिक मुद्दे पर अहम प्रगति हासिल की। 1991 में, भारत का चीन के साथ द्विपक्षीय व्यापार 265 मिलियन डॉलर का था, जो 2003 में बढ़कर 6 बिलियन का हो गया।

जून 2003 में, प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने चीन का दौरा किया। यह दौरा आर्थिक रिश्तों और आपसी विकास के सहयोग के लिहाज से बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। वैश्विक बाजार में दोनों के रिश्ते सहयोगी हैं, न कि प्रतियोगात्मक आई०टी० और साफ्टवेयर सर्विस, चीन के साथ आर्थिक व्यावसायिक सहयोग बढ़ाने के लिए, नये पुल का काम करेगा। 1990 के बाद, अटल बिहारी चौथे ऐसे प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने चीन का दौरा किया। इस दौरे में, विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सहयोग को बढ़ाने पर सहमति बनीं। दोनों देशों के प्रधानमंत्री लाइन ऑफ एक्चुअल कन्ट्रोल पर समझौते का सन्दर्भ लिया। चीन ने ऐतिहासिक घोशणा पत्र, व्यापार संबंधी सहमति पत्र और नौ समझौते पर हस्ताक्षर किए। चीन ने सिक्किम को भारत का हिस्सा मान लिया, जबकि भारत ने तिब्बत को चीन के स्वायत्त क्षेत्र को मान्यता देने का फैसला किया। चीन ने सिक्किम के नाथुला दर्रे को खोलने और इस रास्ते से व्यापार करने पर जोर देने की बात की।

दोनों देशों के नेताओं ने बहुध्रुवीय दुनिया के विचार के प्रति प्रतिबद्धता जाहिर की और भूमण्डलीकरण को अनेक दिशाओं में ले जाने पर सहमति बनीं। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शान्ति और स्थिरता बनाये रखने पर दोनों देश राजी हुए। विवाद को हल करने के प्रयास करते हुए, भारत ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बृजेश मिश्र व चीन के विदेश मंत्रालय वरिष्ठ उपमंत्री दाई – सिंग्गुओ को विशेष

प्रतिनिधि नियुक्त किया। इसके अलावा दोनों देशों ने अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर चिन्ता जताई और आतंकवाद की निंदा की।

भारत और चीन के संबंध 2005 के पहले तक, तनावपूर्ण होने के साथ–साथ मधुरता का पुट लिये हुये बने रहे। साथ ही, संबंधों को मधुर बनाने के लिये समय–समय पर प्रयत्न किये जाते रहे हैं। इसके लिए, दोनों राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के द्वारा समय–समय पर वार्ताएं एवं यात्राएं की जाती रही हैं। इन वार्ताओं के माध्यम से दोनों देशों के बीच सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आदान–प्रदान किये जाते रहे हैं। एक–दूसरे के सहयोगात्मक कार्य द्वारा संबंधों को मजबूत किये जाने का प्रयास किया जाता रहा। व्यापारिक क्षेत्र के आदान–प्रदान द्वारा तनाव के अन्य मुद्दों को भी सुलझाने का प्रयत्न किया जाता रहा है। हालांकि, भारत हमेशा चीन से यह कहता रहा है कि भारतीय विदेश नीति किसी भी राष्ट्र के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की नहीं रही है। भारत ने तिब्बत को चीन का अंग माना है और हमेशा यह स्वीकार करता रहा कि तिब्बत के मामले में, भारत ने सदैव चुप रहने की नीति को अपनाया है।

निष्कर्ष

भारत और चीन के संबंध 2005 के पहले तक, तनावपूर्ण होने के साथ–साथ मधुरता का पुट लिये हुये बने रहे। साथ ही, संबंधों को मधुर बनाने के लिये समय–समय पर प्रयत्न किये जाते रहे हैं। इसके लिए, दोनों राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के द्वारा समय–समय पर वार्ताएं एवं यात्राएं की जाती रही हैं। इन वार्ताओं के माध्यम से दोनों देशों के बीच सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आदान–प्रदान किये जाते रहे हैं। एक–दूसरे के सहयोगात्मक कार्य द्वारा संबंधों को मजबूत किये जाने का प्रयास किया जाता रहा। व्यापारिक क्षेत्र के आदान–प्रदान द्वारा तनाव के अन्य मुद्दों को भी सुलझाने का प्रयत्न किया जाता रहा है। हालांकि, भारत हमेशा चीन से यह कहता रहा है कि भारतीय विदेश नीति किसी भी राष्ट्र के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की नहीं रही है। भारत ने तिब्बत को चीन का अंग माना है और हमेशा यह स्वीकार करता रहा कि तिब्बत के मामले में, भारत ने सदैव चुप रहने की नीति को अपनाया है। करमापा को शरण देना भारत की सम्प्रभुता का मामला है। इस बात पर भारत किसी के दबाव में नहीं आयेगा और चीन को भी इस पर किसी प्रकार का दबाव नहीं डालना चाहिए। भारत द्वारा करमापा लामा को शरण देने से, चीन की सम्प्रभुता पर कोई प्रभाव नहीं पडेगा। अब इस विषय को मुद्दा बनाकर चीन भारत के साथ संबंधों को नये रूप में परिभाषित करना चाहता है, तो यह उसकी स्वयं की इच्छा है। राष्ट्रों के बीच रिश्ते न केवल दो देशों के बीच संबंध के निहितार्थ को बतलाते हैं, बल्कि पूरे क्षेत्र व दुनिया पर भीषण प्रभाव को भी दिखाते हैं। इसलिए, अन्तर्राष्ट्रीय रिश्ते हर मायने में बहुत जरूरी हैं। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि अन्तर्राष्ट्रीय संबन्ध सभी पहलुओं से महत्त्वपूर्ण है और यह पहलू, तब और महत्त्वपूर्ण हो जाता है जब यह मामला दो पड़ोसी राष्ट्रों से जुड़ा होता है। दो देशों के बीच रिश्ता हमेशा महत्त्वपूर्ण होता है, न केवल क्षेत्रीय राजनीति के हिसाब से बल्कि, वैश्विक राजनीति के हिसाब से भी इसका महत्व होता है। अगर दोनों देशों के बीच मित्रतापूर्ण संबंध बने रहते हैं, तो इस क्षेत्र का माहौल अच्छी आक्सीजन युक्त होता है, अर्थात् शान्ति, समृद्धि, उन्नति और विकास की ओर समाज अग्रसर होता है, किन्तु वहीं इसका उल्टा हो तो वातावरण धुएँ एवं जहर से भर

जाता है, जो हमेशा संदेह, प्रतिद्वन्द्विता और शत्रुता आदि से युक्त होता है, जिसमे विकास के स्थान पर प्रतिद्वन्द्विता के कारण आर्थिक प्रगति नहीं हो पाती है। जिसके परिणामस्वरूप, प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। इसलिए राष्ट्रों को अन्य राष्ट्रों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध को बढ़ावा देना चाहिए तथा पड़ोसी राष्ट्रों के साथ इस प्रकार की विदेश नीति से उस क्षेत्र विशेष के साथ वैश्विक शान्ति समृद्धि और स्थायित्व का वातावरण उत्पन्न होगा।

संदर्भ

1. जोनाथन, होल्सलैग. (2013). चाइना एण्ड इण्डियाः प्रास्पेक्ट्स फार पीस. कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. डाल्वी, जे0पी0. (2010). हिमालयन बलण्डर : द करटेन इण्डियन वार आफ 1962. नटराज पब्लिशर्सः राइजर टू द साइनों देहरादून।
3. शौरी, अरूण. (2009). भारत–चीन संबंधः सबक जो चीनियों ने हमें सिखाए और हम सीखना नहीं चाहते. प्रभात पब्लिकेशन. नई दिल्ली।
4. शरण, शंकर. (1998). भारत–चीन संबंध और तिब्बतः एक पुनर्विचार. तिब्बत संसदीय एवं नीति शोध केन्द्र।
5. बहल, राघव. (2010). 'सुपर पावर' भारतीय कछुआ या चीनी खरगोश. प्रभात पब्लिकेशनः नई दिल्ली।
6. डेविड, स्मिथ. (2018). 'द ड्रैगन एण्ड द एलीफैन्ट, चाइना, इण्डिया एण्ड द न्यू वर्ल्ड आर्डर. फ्रोफाइल बुक्स पब्लिशर्स।
7. बघेल, वीरेन्द्र सिंह. (2017). भारत को घेरता चीन. आत्माराम एण्ड संसः नई दिल्ली।